श्री कामेश्वर सिंह (सहायक प्रोफेसर)
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम।
वर्ग — बी० ए० पार्ट — I (प्रतिष्ठा)
पत्र — प्रथम, यूनिट न० — 18
राजनीतिक सिद्धान्त — डॉ० पुखराज जैन
दिनांक — 27-07-2020

प्रजातंत्र और अभिजनवर्ग में तालमेल बैठाया जा सकता है के शेष भाग ----

① एक परिसंचरण की प्रक्रिया :— प्रजातंत्र के साथ सामंजस्य बैठाने के लिए अभिजनों को मतदाताओं के पास जाना पड़ता है और जनता निर्वाचन के माध्यम से उनकी नियुक्ति करती है। मैनहीम ने इस स्थिति को अवसर की समानता की संज्ञा देते हैं। इस प्रकार अवसर की समानता और खुली प्रतियोगिता के माध्यम से अभिजन वर्ग और प्रजातंत्र में तालमेल बैठाया जाता है। यदि परिसंचरण की प्रक्रिया मंद पड़ जाती है तो ऐसी स्थिति में अभिजन वर्ग के गुणात्मक तत्वों का ह्रास प्रारम्भ हो जाता है।

② अभिजनों के मध्य प्रतियोगिता :— अभिजनवादियों के अनुसार प्रजातंत्र में तथा अभिजनों के बीच प्रतियोगिता होती है। उन्हें वर्ग बनाने का अवसर मिलता है और उन वर्ग में नियमित प्रतियोगिता होती है। यह प्रतियोगिता चुनाव के आधार पर होता है। एक वर्ग सत्तारूढ़ हो जाता है। यद्यपि नागरिक शासन में भाग लेने से वंचित रह जाते हैं। तथापि निर्वाचन के माध्यम से समय-समय पर अपने विचारों का अवसर प्राप्त कर लेते हैं।

③ प्रजातंत्र लौह सिद्धान्त का वर्णन किया है :— प्रजातंत्र एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें दलों का नेतृत्व कुछ गिने चुने लोगों के हाथों में होता है। अतः दल का बाजार प्रजातंत्र के हाथ में होता है।

Scanned with CamScanner

इन्हीं व्यक्तियों के बीच खुली प्रतियोगिता होती है और कुछ व्यक्तियों का चुनाव सत्ता के प्रयोग के लिए चुन लिये जाते हैं। मंत्रीमंडल में ऐसे ही लोग होते हैं जो देश के वास्तविक शासक होते हैं। परन्तु इन पर भी जनता का या जनमत का कुछ अंशों में नियंत्रण होता है।

(4) गुणों से सम्पन्न अभिजन :-

सिद्धान्तः और व्यवहारतः प्रजातंत्र और अभिजनवर्ग में स्वाभाविक अंतर विरोध होता है। इस अंतर विरोध को कम करने और दोनों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के लिए अभिजनों में उपयुक्त मानवीय विशेषताएँ होनी चाहिए। एक अच्छा प्रशासक होना चाहिए और अभिजन वर्ग में प्रजातांत्रिक आत्म नियंत्रण की भावना होनी चाहिए। अभिजनवर्ग में तालमेल तभी हो सकता है जब अभिजन वर्ग उपरोक्त गुणों से सम्पन्न हो।

(5) समानता और अभिजन वर्ग :-

प्रजातंत्र का मूल आधार समानता है। अभिजनवाद समानता के स्थान पर संघर्ष और प्रतियोगिता पर आधारित होती है। 20वीं सदी में औद्योगिक क्रान्ति ने विकास के समानता और स्वतंत्रता के द्वार खोल दिये हैं। क्रमशः......

Scanned with CamScanner